वेदनि जो वाखाणु सरोतिनि कियो साख्यातु रे,
नेष्टी वेद वीचार रे, तारियो पंहिंजो पाणु,
सरोती नेष्टी ग्यानवानु को, सभिनी अंगनि साणु,
कोटनि जो कल्याणु, तंहिं सामी कयो शक्ति सां.

वेदों की महिमा का वर्णन करते हुए सामीजी कहते हैं कि साक्षात् श्रोत्रियजनों ने अर्थात् वेद-वेदांग के ज्ञानी पुरुषों ने भी वेदों की प्रशंसा की है। श्रुतियों में निष्ठा रखने वाले साधकों ने तो वेदों का चिंतन-मनन कर स्वयं को भावसागर को पार करवा लिया। श्रुति ग्रंथों में (वेद उपनिषदों में) निष्ठा रकने वाले ज्ञानी पुरुषों ने सभी अंगों के साथ उस शक्ति/ सामर्थ्य से करोड़ों लोगों का कल्याण कर दिया।

आध्यात्मिक या धार्मिक विषय का ठीक ज्ञान वेद है। 'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है ज्ञान या देखना । ऋषियों ने वेद देखे अर्थात् उनको वेदों का साक्षात्कार हुआ, इसलिए इन्हें 'वेद' कहा जाता है। इन ऋषियों को 'वेद-द्रष्टा ऋषि' कहा जाता है। यह भी कहा गया है सृष्टि के पहले परमेश्वर ने वेद निर्माण किये। इसलिए वेद अनादि हैं। वैदिक मानते हैं कि वेद परमेश्वर का नि:श्वास हैं। वेदों को 'शब्द ब्रह्म' भी कहा गया है। वेदों में परमेश्वर के सच्चिदानंद स्वरूप का वर्णन है। परमेश्वर का स्वरूप मूल रूप में ज्ञान है- 'ज्ञानं ब्रह्म'। ज्ञान अर्थात् ब्रह्म। परमेश्वर की इससे बड़ी परिभाषा संसार में अन्य किसी ने नहीं की है। परमेश्वर की उपासना ही ज्ञान की उपासना है। वेद भारतीय अध्यात्म के मूल ग्रंथ हैं। वेद चार हैं। यथा 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद और 4. अथर्ववेद । इनके भी 4-4 भाग हैं। इनको 1. संहिता, 2. ब्राह्मण, 3. अरण्यक और 4. उपनिषद कहा जाता है। वेद संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद्- इन चारों के साहित्य को 'श्रुति' कहा गया है। इन सभी ग्रंथों का अध्ययन करने वाले ब्राह्मण/सत्पुरुष को 'श्रोत्रिय' वेदवेत्ता, वेद-ज्ञानी कहा जाता है। वेद धर्म का मूल होने कारण 'वेद-प्रमाण' का बड़ा महत्व है। वेद हजारों वर्ष पहले सप्त-सिंधु के किनारे लिखे गये । वेद लौकिक और अलौकिक ज्ञान के साधन हैं। वेदों के ज्ञान एवं अध्ययन से लोक-कल्याण हुआ है।

सामी साहब ने इन्हीं वेदों की महिमा उपर्युक्त श्लोक में वर्णित की है। वेदों की प्रशंसा श्रोत्रियों ने भी की है, जिन्हें वेदों का साक्षात्कार हुआ है। वेदों में विश्वास, निष्ठा एवं श्रद्धा रखने वालों का जीवन सफल हो गया है। वे भवसागर तैर गये हैं।

■